INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(2): 32-38
Received: 02-06-2023
Accepted: 08-07-2023

Ajeet Kumar
Ph.D Scholar, Department of History, University of Delhi, New Delhi, India

Corresponding Author:
Ajeet Kumar
Ph.D Scholar, Department of History, University of Delhi, New Delhi, India

मौखिक इतिहास में स्मृति, तथ्य और संस्कृति के माध्यम से मजदूर वर्ग का इतिहास

Ajeet Kumar

सारांश

यह लेख मजदूर वर्ग की स्मृति और संस्कृति तथा उनकी यादों के मौखिक स्रोतों के माध्यम से लिखित रिकॉर्ड की तुलना करके मजदूर वर्ग की कहानियों, प्रतीकों, किंवदंतियों और काल्पनिक पुनर्निर्माण की संरचना को निहित करता है। जिसमें स्मृति और तथ्य मौखिक इतिहास का स्वरुप तैयार किया गया है। एलेसेंड्रो पोर्टेली अपनी पुस्तक 'द डेथ ऑफ लुइगी ट्रैस्टुली' में बताते हैं कि पारंपरिक संस्कृतियों में सांस्कृतिक केन्द्रों के अध्ययन और मौखिक इतिहास के दृष्टिकोण से इतावली मौखिक इतिहास अनुसंधान परंपरा के बारे में बताते हैं, जिसमें राजनैतिक प्रश्न अपना एक अभिन्न हिस्सा रखता है। इस दृष्टिकोण का मूल आधार यह है कि ऐतिहासिक तौर पर हाशिये के लोगों को सुनना या सुनाना ही काफी नहीं है बल्कि उनकी आवाजो को वर्ग के आधार पर तथा उनके यादों के दमन की स्थितियों कि जांच भी एक अहम प्रश्न है। तथा बहुसंस्कृति परिप्रेक्ष्य के साथ यह मौखिक इतिहास के लिए नई चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो औद्योगिक समाज में सामाजिक समूहों और वर्गों के बीच सांस्कृतिक संघर्ष और संचार की जांच करते हुए लोगों को अपने जीवन को समझने के लिए तथा उनकी यादों के तरीकों की पहचान के लिए मौखिक इतिहास के विश्लेषण में एक वास्तविक सफलता है। पोर्टेली का मानना की खेल सामान्य रूप से विभाजित समाजों को एकजुट और शांत करने में मदद करते हैं। खेलो को श्रमिकों के दैनिक अनुभव से कई तरीकों से जोड़ा गया श्रमिकों की पहचान खेलों से की जाती थी, क्या यह सच हो सकता है। क्या खेल सामान्य रूप से विभाजित समाजों को एकजुट और शांत करने में मदद करते हैं।

मौखिक इतिहास में समय, कार्य, ध्वनि, स्पेस, खेल सबका अपना महत्व और स्थान होता है। कहानी सुनाने का अर्थ समय के खतरे के खिलाफ हथियार उठाना, समय का विरोध करना या समय का सदुपयोग करना। जैसे कथाकारों को समय से स्वयं को ठीक करने और समय में आगे बढ़ने के लिए कहानी को सुरक्षित करना आवश्यक है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक कहानियों पर भी लागू होता है। उन मिथकों पर भी जो एक समूह तथा व्यक्तिगत यादों की पहचान को आकार देता हैं यानी कहानी समय के साथ टकराव है, कहानी को बनाए रखने के लिए एक विशेष कुछ व्यक्तिगत यादों का समय हो सकता है।

जैसे की 'बैक इन स्लेवरी टाइम्स' फार्मूला का इस्तेमाल लोक कथाओं, व्यक्तिगत या पारिवारिक तथा उन दोनों को पेश करने के लिए किया जा सकता है। मैं यहां समय और कहानियों के माध्यम से समय और कहानियों के बीच के संबंध का पता लगाने का प्रयास करूंगा जैसा कि मौखिक कथाकारओ द्वारा उन्हें बताया जाता है। क्योंकि वह कलेक्टर की उपस्थिति से आकार लेते हैं और जैसा कि वह इतिहासकारों द्वारा लिखे गए हैं और लेखक द्वारा इन विषय पर जोर दिया गया। वहीं कहानियां सुनाने का भी समय होता है, उदाहरण के लिए ऐसे किस्से जो कि सुसमाचार के पाठन में जो की कहानी के संदर्भ में एक विशेष गुण लेते हैं। क्या सच में जीवन का इतिहास और व्यक्तिगत कहानियां समय पर निर्भर करती है, क्योंकि वह कथाकारों के जीवन के प्रत्येक दिन के जोड़ और घटाव से गुजरते हैं।

मैं इन सवालों को भारत के आज़ादी के बाद इतने सालो बाद भी उसकी क्या प्रासंगिकता है, उनकी जिन्दगी में क्या बदलाव आया है, को मौखिक इतिहास के माध्यम से बताने का प्रयास करूंगा।

कूटशब्दः मजदूर, वर्ग, स्मृति, संस्कृति, मौखिक इतिहास

प्रस्तावना

मजदूर वर्ग की स्मृति और संस्कृति तथा उनकी यादों के मौखिक स्रोतों के माध्यम से लिखित रिकॉर्ड की तुलना करके मजदूर वर्ग की कहानियों, प्रतीकों, किंवदंतियों और काल्पनिक पुनर्निर्माण की संरचना को निहित करता है। जिसमें स्मृति और तथ्य मौखिक इतिहास का स्वरुप तैयार किया गया है। एलेसेंड्रो पोर्टेली अपनी पुस्तक 'द डेथ ऑफ लुइगी ट्रैस्टुली' से पता चलता हैं कि पारंपरिक संस्कृतियों, औद्योगीकरण में परस्पर खेलकूद व अन्य कार्य के माध्यम से लोगों द्वारा पारंपरिक संस्कृति के उपयोग से संबंधित थे। जो कि उनके संघर्ष को दिखा रहे हैं। पोर्टेली के कार्य को सांस्कृतिक केंद्रों के अध्ययन और मौखिक इतिहास के दृष्टिकोण से समझ सकते हैं पोर्टेली के कार्य इतावली मौखिक इतिहास अनुसंधान के परम्परा से संबंधित है जिसमें राजनीतिक प्रश्न एक अभिन्न अंग है। इस दृष्टिकोण का मूल आधार यह है कि ऐतिहासिक तौर पर बेजुबानों को सुनना या सुनाना ही काफी नहीं है बल्कि उनकी आवाजों को वर्ग के आधार पर, उन यादों के दमन की स्थितियों की जांच भी अहम प्रश्न है। तथा बहुसंस्कृति परिपेक्ष्य के साथ यह मौखिक इतिहास के लिए नया चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है। जो औद्योगिक समाजों में सामाजिक समूहों और वर्गों के बीच सांस्कृतिक संघर्ष और संचार की जांच करते हुए उन्होंने लोगों को अपने जीवन को समझने के लिए उनकी यादों के तरीकों की पहचान की, जो की मौखिक इतिहास के विश्लेषण में एक वास्तविक सफलता है। पोर्टेली उन मतभेदों को संबोधित करते है और तर्क देते है कि तथ्य और स्मृति के बीच विसंगति मौखिक स्रोतों के मूल्यों को ऐतिहासिक दस्तावेज के तौर पर प्रस्तुत करती है। हमें यह देखने में मदद करता है कि लोग महत्वपूर्ण घटना को कैसे समझते हैं। तथा एक कहानी को अलग-अलग लोग किस तरह से बताते हैं? क्या बदलाव होता है? क्या इससे तथ्य बदल जाते हैं? ये महत्वपूर्ण सवाल भी उभर कर आते हैं। मौखिक इतिहास केवल उन वर्गों की संस्कृतियों का दस्तावेजीकरण करने का एक उपकरण नहीं है बल्कि इन्हें अनदेखा कर दिया गया है जैसे मौखिक स्रोत हमें अनपढ़, मजदूर लोगों या सामाजिक समूह के बारे में जानकारी देते है, जिनका इतिहास या तो गायब है या विकृत हैं।

मजदूर वर्ग की स्मृति और तथ्य

अनिरुद्ध देश पांडे[1] अपने लेख में बताते हैं कि मौखिक इतिहास सहायता प्रदान करता है सामाजिक न्याय में, खासकर भारत जैसे देशों में

[1] Deshpande, Anirudh. Past, Present, and Oral History, Economics and Political Weekly.

जहां साक्षरता का स्तर काफी कम है और जहां उत्पीड़ितो की यादें, स्मृतियों को जनता के बीच से मिटा दी जाती हैं। लेकिन मौखिक इतिहास ने मजदूर वर्ग को दिशा प्रदान किया है। यह एक ऐसी पद्धति का निर्माण करता है जो की लोगों की सामूहिक यादें, अतीत से वर्तमान के संघर्ष को जीवित करता है। मौखिक इतिहास में अतीत से लेकर वर्तमान तक जो घटनाये घटित होती है, उन यादों और धारणाओं को भविष्य की पीढ़ियों के लिए रिकॉर्ड किया जाता है। जिसमें मुख्यतः साक्षात्कार लिया जाता है, इसे ऑडियो टेप, वीडियो, टेप के माध्यम से संरक्षित किया जाता है। जिससे ऐतिहासिक तौर पर हमें उस समय तथा उनके दौर में जो घटना घटीत हुई उन जानकारियों को प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि मौखिक इतिहास की अपनी सीमा है, क्योंकि यह लिखित रूप में ना होकर लोगों के व्यक्तिगत यादें या सामूहिक यादें होती है। जिस में लोगों की कल्पनाएँ, कहानियां व मिथक, भी हो सकती है। जैसे एक कहानी को अलग-अलग लोग किस तरह से बताते हैं? उनमें क्या बदलाव होते है? इससे कभी-कभी तथ्य भी बदल जाते हैं क्योंकि वह उन्हीं विषयों के बारे में बताते हैं जो उनकी स्मृतियों में होते है। देशपांडे बताते हैं कि अतीत और वर्तमान की परम्पराएँ हमेशा प्रतिबिंबित करने के रूप में समझा जाना चाहिए जैसे कि हम बात करें महाकाव्य और लोककथाएं की, इनमें काल्पनिकता काफी ज्यादा है जो कि एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी मौखिक तौर पर चलती रहती है। उदाहरण के लिए रामायण, महाभारत, वेद, पुराण आदि जो कि एक समय मौखिक रूप में थे ये बाद में लिखित स्वरुप में देखने को मिलते हैं। वही एक अन्य उदाहरण अला रुदल के माध्यम से गायन द्वारा कहानियों को सुनाते हैं। यह आवश्यक है कि इनमें काल्पनिक बाते काफी ज्यादा होती है लेकिन इन महाकाव्य और लोककथाओं में जिन भिन्नता और संघर्षों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं वे संकेत करते हैं उस समय के समाज, उनके संघर्ष को, जिससे हम उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक और अभिजात्य और सर्वहारा वर्ग का इतिहास का पता लगा सकते हैं।

ट्रेस्टुली की कहानी का महत्व इस तथ्य में निहित है कि जो उन्होंने आधार बनाया उसमें सामूहिक स्मृति, कल्पना, कहानियों, प्रतीकों, किंवदंतियों और काल्पनिक पुनर्निर्माण का आधार देखने को मिलता है। कहानी बताने वाले की सोच, उसका तरीका और इच्छा, उसके व्यवहार के द्वारा कहानी सही नहीं बताना, महत्त्वकाशां इन सभी विषयों का वर्णन करते हैं। वे यह भी बोलते हैं कि लिखा विषय ही हमेशा विश्वसनीय नहीं होता है। एलेसेंड्रो पोर्टेली जब लुइगी ट्रेस्टुली की मृत्यु की कहानी से आकर्षित हुए क्योंकि उनकी काव्यात्मक त्रुटियों ने कथाकारों के साझा व्यक्तिपरक सपने, इच्छाओं और मिथकों को व्यक्त किया। एलेसेंड्रो पोर्टेली जब कहानी सुन रहे थे तो वे मौखिक इतिहास के तलाश में ना होकर, वे लोकगीत की तलाश में थे। मौखिक स्रोत हमें हाशिए के समुदाय या सामाजिक समूह के बारे में जानकारी देता है जिन का इतिहास या तो गायब हैं या तो विकृत है। स्रोत प्रवासियों के पत्र, साक्षात्कार दोनों अलग-अलग हैं इसलिए मूल और सामग्री सामान्य रुप से सामाजिक इतिहास द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्रोत की श्रेणी से मौखिक स्रोत को अलग करने के लिए पर्याप्त नहीं है. इस प्रकार मौखिक इतिहास के कई सिद्धांत समग्र रुप से सामाजिक इतिहास के सिद्धांत है मौखिक इतिहास के हमारे लेखन के विस्मय ने भाषा और संचार की हमारी धारणा को इस हद तक विकृत कर दिया है कि हम अब न तो मौखिकता को समझते हैं और ना ही स्वयं लेखन की प्रकृति को समझते हैं. तथ्य की बात करें तो लिखित और मौखिक स्रोत परस्पर अनन्य नहीं है लेकिन मौखिक स्रोत का अवमूल्यन और अधिक मूल्यांकन विशिष्ट गुणों को रद्द करके समाप्त होता है। इन स्रोतों को या तो

पारंपरिक लिखित स्रोतों के समर्थन या तो सभी विकृत समस्या के हल के रूप में बदल देता हैं।

समय के बाहर समय, समय के बिना समय और परियों की कहानियों का समय (जैसा कि वंस अपॉन ए टाइम) यह कुछ व्यक्तिगत यादों का समय हो सकता है जैसे की (बैक इन स्लेवरी टाइम्स) फार्मूला का इस्तेमाल परंपरा में लोक कथाओं, व्यक्तिगत या पारिवारिक तथा उन दोनों को पेश करने के लिए किया जा सकता है। मैं यहां समय और कहानियों के बीच समय तथा कहानियों के बीच के संबंध का पता लगाने का प्रयास कर रहा हु। जैसा कि मौखिक कथाकारों द्वारा उन्हें बताया जाता है क्योंकि वह उपस्थिति से आकार लेते हैं और जैसा कि वे इतिहासकारों द्वारा लिखे गए और लेखन द्वारा इन विषय पर छोड़ दिया गया है।

कहानियां सुनाने का समय होता है उदाहरण के लिए ऐसे किस्से जो कि सुसमाचार के पाठन में जो की कहानी के संदर्भ में एक विशेष गुण होते हैं जैसे पारिवारिक, पार्टी, बैठक या राजनीतिक बैठक आदि। एक व्यक्ति के लिए दिन प्रतिदिन के निर्माण में आत्मकथा, जैसे की एलेसेंड्रो पोर्टेली[2] की एक व्याख्या है कि आपकी बेटी कहती है कि आपने उसे अपने जीवन के बारे में बहुत कुछ बताया है आप उसे इसके बारे में वास्तव में किस समय बताते हैं? सॉलिडीया कहता है कि हर समय जब मैं घर आता हूं और मैं शिकायत करता हूं कि मेरा दिन कठिन रहा है और मैं थक गया हूं जब मैं तुम्हारी उम्र का था कैसे रहता था, क्या करना था, कैसा जीना है, घर आओ और सारे कपड़े और अपनी सभी चीजें ठीक पाते हो और जब मैं छोटा था तो मैं सब काम खुद करता था। यही बातें मेरी मां ने मुझसे उम्मीद की। इस उदाहरण के माध्यम से समय का महत्व को बताया गया है। किस्से जो है समय के साथ चलते हैं समय के साथ बढ़ते हैं समय के साथ खत्म होते हैं यही कारण है कि संस्कृतियाँ समय से कुछ स्वतंत्रता हासिल करने और शब्दों को संरक्षित करने के तरीके विकसित करती है।

प्रवचन की औपचारिकता समय के साथ संघर्ष में एक हथियार का स्वरूप है जिसमें कविता भी सम्मिलित है। कविता एक ऐसी विधि है जो कि मौखिक कवियों द्वारा उपयोग किए जाने वाला उपकरण है। जो समय को धीमा कर देती है और उन्हें बोलते, गाते समय अपने प्रदर्शन में रचना करने की अनुमति देती हैं, जैसे कि कुछ समाजों में विशिष्ट व्यक्तियों परिवारों को शब्दों को संरक्षित करने के लिए सौंपा जा सकता है। जैसा कि अफ्रीका ग्रिट्स के मामले में देखने को मिलता है फिर भी कहानियां बदलती है यहां तक की मिथक भी समय के अनुसार बदलते हैं। जीवन का इतिहास और व्यक्तिगत कहानियां समय पर निर्भर करती है क्योंकि वह कथाकार के जीवन के प्रत्येक दिन के जोड़ और घटाव से गुजरते हैं इसलिए एक जीवन इतिहास एक जीवित विषय है जो कि हमेशा प्रगति पर होता है जिसमें कथाकार अपने अतीत की छवि को संशोधित करते हैं और आगे बढ़ते हैं।

मौखिक इतिहास में ध्वनि और स्पेस का सांस्कृतिक महत्व

रोमन जैकबसन और मॉरिस होले के अनुसार संगीत के पैमाने और ध्वन्यात्मक संरचनाएं ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग संस्कृति ध्वनि, प्राकृतिक भेद के नियमों को लागू करके प्राकृतिक तौर पर आकार देने के लिए किया जाता है। वहीं भाषाई अभिव्यक्ति और अर्थ का वर्णन निरंतर पदार्थ के आकार द्रव्यमान को काटने के संदर्भ में प्रस्तुत किया है जैसे कि खंड और ग्रिड। ध्वनि और स्पेस के विभाजन से विरोधाभासी और बदलते नियमों से एक विशिष्ट औद्योगिक और शहरी संदर्भ में लोग और श्रमिक वर्ग की संस्कृति

[2] Portelli, Alessandro. (1990). The Death of Luigo Trastulli and Other Stories

को कैसे प्रभावित किया यह पता चलता हैं। पोर्टेली ने युक्रोनिक ड्रीम्स (काल्पनिक कहानियों) के द्वारा मजदूर वर्ग की मेमोरी के माध्यम से घटनाओं का वर्णन किया हैं। रेडियो और रिकॉर्ड किए गए संगीत का आगमन औद्योगिक रूप से निर्मित उपकरणों की शुरुआत ने पुरानी पद्धति को बदल दिया। जैसे पुराने तरीके में बांस के विधाओं का इस्तेमाल किया जाता था पुरानी विधाओं में गायन के लिए ऑर्गेनेटो के निश्चित स्वर का नजर अंदाज देखने को मिलता है और ऑर्गेनेटो के साथ पारंपरिक गायकों के कई प्रदर्शन में विभिन्नता के आधार पर सांस्कृतिक महारत के लिए संघर्ष देखने को मिलता है हालांकि ये सांस्कृतिक प्रणालियां समान प्रतिष्ठा और शक्ति से संपन्न नहीं है जब आधुनिक पॉप गाने की कोशिश में पारंपरिक गायन अभी भी अपनी गायक शैली में अपनी संस्कृति के इतिहास को प्रकट करते हैं। वही मौखिक इतिहास में मुख्य समस्या भाषण का अनुवाद (विशेषकर गैर मानक भाषण) जो की लिखित रूप में है। प्रति लेखन, क्षेत्रीय, वर्ग या व्यक्तिगत पहचान और इतिहास के कुछ सार्थक चिन्हों को मिटाने से नहीं बचा जा सकता है इसलिए यह देखना दिलचस्प की बात है कि मुखबिर स्वयं समस्या से कैसे निपट पाते हैं जैसे दांते की कविता और भाषण में छोटी स्कूली शिक्षा आवर्तक तौर पर मुख्य समस्या थी तथा कुछ त्रुटि व्याकरण उच्चारण में भी देखने को मिलता है जो कि कठिनाई पूर्ण थी। वर्नाकुलर कविता जैसे बार्टोलिनी की कविता को जो कि दिलचस्प बनाता है वह यह कि वह इन सभी रणनीतियों को एक संदर्भ में उपयोग करता है जैसे स्थानीय भाषा के उच्चारण को सुरक्षित करना।

एलेसेंड्रो पोर्टेली युक्रोनिक ड्रीम्स के बारे में भी बताते हैं। सर्वप्रथम हमें युक्रोनिक ड्रीम्स को समझना होगा कि यह क्या है? यह एक प्रकार से काल्पनिक कहानियों के बारे में है जिसे युक्रोनिक कहा गया लेकिन इसे कुछ विशेष संदर्भ में परिभाषित किया गया है। जैसे कि विज्ञान तथा आलोचना उस अद्भुत विषय के रूप में कल्पना करना है। जिसमें लेखक ने मजदूरों की मेमोरी के माध्यम से घटना का वर्णन किया जिसे ग्रीक में टोपास (स्थान) क्रोनोस (समय) के तौर पर जानकारी प्राप्त होता है। मौखिक इतिहास में समान कहानियां कैसे पाई जाती है? 1970 के दशक में टेर्नी में पुराने समय के कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं से एकत्र की गई ज्यादातर मौखिक गवाही पर चर्चा की गई है जैसे मध्य इटली के उम्ब्रिया में एक औद्योगिक शहर में ये कहानियां अक्सर इस बात पर जोर देती है कि इतिहास कैसा था? क्या ऐसा हो सकता है? कैसा होना चाहिए? वास्तविक के बजाय संभावना पर ध्यान केंद्रित था।

पोर्टेली उन मतभेदों को संबोधित करते है और तर्क देते है कि तथ्य और स्मृति के बीच विसंगति मौखिक स्रोतों के मूल्यों को ऐतिहासिक दस्तावेज के तौर पर प्रस्तुत करती है। यह हमें देखने में मदद करता है कि लोग महत्वपूर्ण घटना को कैसे समझते हैं? तथा एक कहानी को अलग-अलग लोग किस तरह से बताते हैं? क्या बदलाव होता है? क्या इससे तथ्य बदल जाते हैं? ये महत्वपूर्ण सवाल भी उभर कर आते हैं। मौखिक इतिहास केवल उन वर्गों की संस्कृतियों का दस्तावेजीकरण करने का एक उपकरण नहीं है बल्कि इन्हें अनदेखा कर दिया गया है जैसे मौखिक स्रोत हमें अनपढ़, मजदूर लोगों या सामाजिक समूह के बारे में जानकारी देते है, जिनका इतिहास या तो गायब है या विकृत हैं। मौखिक इतिहास में समय, कार्य, ध्वनि, स्पेस, खेल सबका अपना महत्व और स्थान होता है।

पॉल थॉमसन मौखिक साक्षात्कार के तहत मौखिक परंपरा और क्रॉस चश्मदीदो कि जांच के बारे में बताते है। वह मौखिक इतिहास के मजिस्ट्रियल विश्लेषण पर जोर देते हैं। अगर हम मौखिक इतिहास की बात भारतीय संदर्भ में करें

तो जैसा देशपांडे अपने लेख में भी बोलते हैं की इस विचार से सहमत होना बंद कर दिया जाए कि प्राचीन भारतीय मूलतः अनैतिहासिक थे। भारत में इतिहास लेखन की एक समृद्ध परंपरा, मौखिक गवाही के आधार पर देखने को मिलती है। हालांकि स्मृति, इतिहास और कल्पना अविभाज्य हैं। वही इतिहास कल्पना के समान नहीं है। लुईगी और अन्य कहानियों के माध्यम से साक्षात्कार, मौखिक गुणवत्ता और साक्षात्कार कर्ता और विषय की सटीक व्यक्तिपरकता के बीच यह एक मानव साहित्यिक संवाद कहलाती है।

एलेसेंड्रो पोर्टेली इस प्रकार एक महत्वपूर्ण दार्शनिक ध्यान प्रदान करते है जो कभी भी क्षेत्रीय कार्य से अलग नहीं होता हैं तथा मौखिक इतिहास का आधार है। एलेसेंड्रो पोर्टेली दिखाते हैं कि स्मृति पर काम करने वाली जो ताकते हैं वह किसी भी घटना को याद करने के तरीके को नियंत्रित करते हैं। मौखिक इतिहास में समय के कार्य का महत्व समझना अति आवश्यक हैं। कहानी सुनाने का अर्थ है समय के खतरे के खिलाफ हथियार उठाना, समय का विरोध करना या समय का सदुपयोग करना। कथाकार को समय से स्वयं को ठीक करने और समय में आगे बढ़ने के लिए कहानी को संरक्षित किया जाना चाहिए। यह व्यक्तिगत और सामूहिक कहानियों पर भी लागू होता है। उन मिथकों पर जो एक समूह की पहचान को आकार देते हैं साथ ही साथ व्यक्तिगत यादें जो व्यक्ति की पहचान को आकार देती है यानी कहानी समय के साथ टकराव है। कहानी को बनाये रखने के लिए उसे एक विशेष समय और उसके प्रयास में निहित किया जाता है। पॉल थॉमसन[3] अपनी पुस्तक "The Voices of the Past: Oral History" में कहते हैं कि मौखिक इतिहास एक शोध पद्धति से कहीं अधिक हैं। मौखिक इतिहास, इतिहास के प्रति एक दृष्टिकोण देता है जिससे व्यक्तिगत लोगों को जांच में रखा जाता हैं तथा इसने श्रमिकों, महिलाओं और प्रवासियों को इतिहास के नायकों में बदल दिया जो कि एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यही कार्य हमें पोटली के मौखिक इतिहास में देखने को मिलता है। पॉल थाम्पसन मुख्य तर्क यह देते हैं कि उन्नीसवीं सदी के जर्मन इतिहासकार लिमो कॉल्ड बॉन राके द्वारा विकसित इतिहास के मॉडल, जो विशेष रुप से लिखित दस्तावेजों पर केंद्रित था। इतिहासकारों ने लोगों की यादों को संदिग्ध और सांसारिक रूप से अस्वीकार करना शुरु कर दिया। हालांकि इतिहासकारों, प्राचीन शास्त्रियों और मध्य युगीन भिक्षुओं, पुनर्जागरण और तत्कालीन ज्ञानोदय लेखकों से लेकर 19 शताब्दी में थॉमस वांटगनतन मैकाले, जूल्स मिशेलेट और विल्टम दिल्थे में मौखिक साक्ष्य का काफी ज्यादा प्रभाव देखने को मिलता है। खासकर पॉल थॉमसन और सह लेखक जोआना बोर्नेट ने मौखिक इतिहास लेखन को महत्व दिया जिसमें साहित्यिक ग्रंथों, आत्मकथाओं, पत्रकारिता, सर्वेक्षण, मजदूर वर्ग के रिपोर्ट की चर्चा देखने को मिलती है। पॉल थॉमसन मौखिक इतिहास पर जोर देते हैं कि साक्षात्कार स्मृति अध्ययन सामग्री को कैसे समझें तथा इन्हें संग्रह और एकत्रित कैसे किया जाए, यह कार्य एलेसेंड्रो पोर्टेली के लेख में भी देखने को हमें मिलता है। डेविड हनीसे[4] अपने लेख को ऐतिहासिक मौखिक परंपराओं पर केंद्रित करते हैं। वनजीना[5] ने अपने लेख में मौखिक परंपरा को क्लासिक दर्जा दिलाया, यह बताते हैं कि मौखिक परंपरा अपने आप में अध्ययन योग्य है। ये मौखिक परंपरा से इतिहास को समझने की बात करते हैं ना कि केवल प्रत्यक्ष वादी मानदंडों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। वहीं अलोन[6] मौखिक इतिहास को संस्कृति इतिहास और स्मृति के सिद्धांत की बात करते हैं और

[3] Thompson, Paul, with Joanna Birnat. (2017 revised edition). The Voices of the Past: Oral History

[4] Henige, D, (1982). Oral Historiography

[5] Vansina, Jan. (1985). Oral Tradition as History,

[6] Confino, Alon. (1997). "Collective Memory and Cultural History: Problems of Method

बताते हैं कि जिस तरीके से लोग अतीत की भावना का निर्माण करते हैं। इसका उपयोग सबसे पहले स्मृति का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा ये अतीत के प्रतिनिधित्व को दर्शाता है।

सर्वहारा मजदूर के बच्चों की कहानी से पता चलता है, कि कैसे कठिनाइयों से वे इन कार्य को करते हैं जो अन्य लोग आसानी से नहीं कर पाते थे। पोर्टेली का मानना की खेल सामान्य रूप से विभाजित समाजों को एकजुट और शांत करने में मदद करते हैं। खेलो को श्रमिकों के दैनिक अनुभव से कई तरीकों से जोड़ा गया श्रमिकों की पहचान खेलों से की जाती थी, खेल सामान्य रूप से विभाजित समाजों को एकजुट और शांत करने में मदद करते हैं। लेकिन श्रमिकों की अपनी संस्कृति के निर्माता होने की भावना को कमजोर कर दिया गया था। और उसी समय राष्ट्रवाद और सैन्यवाद के नए अर्थ पेश किए गए।

अतः मैं निष्कर्ष रूप में कह सकता हूं कि पोर्टेली इस लेख के द्वारा महत्वपूर्ण दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करते है जो कभी भी क्षेत्रीय कार्य से अलग नहीं था जो मौखिक इतिहास का आधार है और मौखिक इतिहास की कार्यप्रणाली से संबंधित हैं, तथा अन्य पहलू इसके परिणाम दे रहे हैं। इस लेख में मैंने मौखिक परंपरा और मौखिक इतिहास के माध्यम से इतावली समाज का वर्णन स्मृति, कहानियों, तथ्यों के माध्यम से मजदूर वर्ग के इतिहास को दिखने का प्रयास किया है कि कैसे मौखिक इतिहास ने हाशिए के समुदाय जैसे : सर्वहारा के इतिहास को मुख्यधारा प्रदान की। क्योंकि मुख्यतः हाशिए के समुदाय पढ़े लिखे नहीं थे इस कारण वे स्वयं अपना इतिहास नहीं लिख सकते थे, इस प्रकार मैं कह सकता हूं कि मौखिक इतिहास ने उनके इतिहास को इतिहास में अपनी जगह प्रदान की। स्मृति के माध्यम से उनका साक्षात्कार द्वारा उनके दिन चर्या में क्या-क्या घटित हो रहा था। आज के समय में भी मजदूर वर्ग का इतिहास जानने के लिए मौखिक इतिहास एक अहम पहलू है जो उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति क्या रही आदि इन सभी विषयों पर मौखिक इतिहास द्वारा हमें यह सब जानकारी प्राप्त कर सकते है।

Refernces

1. Portelli, Alessandro. The Death of Luigo Trastulli and Other Stories: Form and Meaning in Oral History New York: CUNY Press; c1990.
2. Benison, Saul. Reflections on Oral History. The American Archivist. 1960;28:1,
3. Confino, Alon. Collective Memory and Cultural History: Problems of Method. The American Historical Review. 1997;102:5.
4. Thompson, Paul, with Joanna Birnat. (Revised edition). The Voices of the Past: Oral History. New York: Oxford University Press; c2017
5. Henige D. Oral Historiography. London: Longman; c1982.
6. Vansina, Jan. Oral Tradition as History, London, James Currey Publishers; c1985.
7. Deshpande, Anirudh. Past, Present, and Oral History, Economics and Political Weekly.